19/06/2021 B.A Subsidiary Paper 1

Page No.: 1
Date: / /

Q जाति से आप क्या समझते हैं? जाति की विशेषताओं का वर्णन करें।
What do you mean by Caste? How do Characteristics of case.

Ans जाति शब्द अंग्रेजी भाषा के Case शब्द पुर्तगाल भाषा के (Castus) शब्द से लिया गया है। जिसका तात्पर्य है प्रजाति या ~~नस्ल~~ नस्ल। कुछ लोग इस शब्द की उत्पत्ति स्पेन की भाषा के शब्द "Casta" से भी मानते हैं जिसका अर्थ है प्रजाति अथवा प्रजाति के भेद। वर्तमान युग में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1563 में ग्रेसिया डी ओर्या (Garacia de orea) ने किया था। जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने पिता के व्यवसाय को नहीं बदलता है।

मोची जाति के लोग सभी एक जाति के होते हैं। जाति एक ऐसा शब्द है जो प्रतिदिन बोलचाल में प्रयोग किया जाता है। परन्तु इसका वास्तविक अर्थ समझना कठिन है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने जाति की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है-

(1) डा० मजूमदार और मदान (D R Majumdar and Madan) के अनुसार " जाति एक बन्द वर्ग है। (Caste is a Closed Class.)

(2.) केतकर (Ketkar) के अनुसार जाति एक सामाजिक समूह होता है जिसमें दो प्रमुख विशेषताएँ होती हैं - (1) सदस्यता केवल उन्हीं लोगों तक सीमित रहती है जो

इस समूह के सदस्यों में जन्म लेते हैं और (ii) सभी सदस्य एक कठोर सामाजिक कानून के द्वारा समूह के बाहर विवाह करने से वञ्चित कर दिये जाते है।

(3) मैकाइवर तथा पेज (Maciver and Page) के अनुसार, जब सामाजिक स्तर का निर्धारण पूर्णतया इस प्रकार होता है कि जन्म मनुष्य का भाग्य इस प्रकार निश्चित कर दे कि इसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हो सके तो वर्ग जाति का रूप ले लेता है।

अतः जाति प्रथा में रोज परिवर्तन हो रहे हैं इसलिए जाति की कोई स्थायी और सार्वभौम परिभाषा देना सम्भव नहीं है। जाति की रचना में भी स्थान और काल के अनुसार भिन्नता पाई जाती है। इसलिए निश्चित परिभाषा का बनाना एक कठिन कार्य हो जाता है।

जाति की विशेषताएँ (Characteristics of Caste)

(1) जन्म पर आधारित → जाति की एक प्रमुख विशेषता है कि इसकी सदस्यता जन्म पर निर्भर करती है। जो व्यक्ति जाति में ~~[illegible]~~ उत्पन्न होता है, वह मर उस जाति का सदस्य बना रहता है।

2. अन्तर्विवाही :- जाति का ऐसा जन समूह है ~~अर्न्तविवाही समूह~~ जिसके सदस्य आपस में विवाह कर सकते है। जाति के सदस्य जाति में ही विवाह कर सकते है। जाति अन्तर्विवाही समूह है।

(3) खान-पान के प्रतिबंध - एक जाति का सदस्य दूसरी जाति के सदस्य के साथ खाना पीना नही करता है। विशेषकर उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के साथ खान-पान का संबंध नही रखते है।

(4) निश्चित पेशा - प्रत्येक जाति के निश्चित पेशे होते है। एक जाति का व्यक्ति अपनी जाति का ही पेशा करता है। और उन्ही से अपनी आजीविका कमाता है।

(5) जातीय पंचायत - प्रत्येक जाति की अपनी एक पंचायत होती है। जाति की पंचायत के निर्णयों को जाति के सभी सदस्य मानते है।

(6) पद सोपान प्रणाली - जिस प्रकार सीढ़ी के डंडे ऊपर नीचे होते है उसी प्रकार जाति प्रथा में भी उच्च नीच्य की भावना पाई जाती है। सर्वोच्च शिखर पर एक उच्च जाति होती है उसके नीचे क्रमश दूसरी जातियां होती है।

(7) बन्द मार्ग - जाति में किसी दूसरी जाति का सदस्य शामिल नही हो सकता है। और न कोई जाति से बाहर ही जा सकता है। इस प्रकार जाति एक बन्द मार्ग है।

(8) समाज का खण्डात्मक विभाजन - जाति प्रथा में समाज का खण्डात्मक विभाजन पाया जाता है। प्रत्येक खण्ड के अनेक निश्चित कार्य होते हैं। भारत में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शूद्र जाति पाये जाते हैं। उनके अलग-अलग कार्य होते हैं।

(9) सामाजिक निर्योग्यताएँ - जाति व्यवस्था में छुआछूत की प्रधानता पाई जाति है। ऊँची जाति निम्न जाति के साथ मिलकर कार्य करने के लिए तैयार नहीं है।

(10) जातिय बहिष्कार - जाति के सदस्य अपनी जाति की पंचायत के निर्णय तथा आदेशों का पालन करते हैं। यदि वे उनका उल्लंघन करते हैं तो उनका जाति से बहिष्कार कर दिया जाता है।

भारत की जाति प्रथा जो पहले चला आ रहा था। उसमें आज कुछ सी परिवर्तन देखा जा रहा है गाँवों में कम मगर शहर में लगभग इस का अन्त हो गया है यहाँ पर ऊपर की नीच में जोड़ा गया है जिसे हम वर्ग class कहते हैं।

=

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest fac
Dept of Sociology.
Date - 19/06/2021